शोध मंथन Vol. XVI No.I Jan.- Mar. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

कुमाऊँ के प्राचीन आवासीय भवनों की कलात्मकता में आधुनिकीकरण का प्रभाव

प्राप्तिः 21.02.2025
स्वीकृतः 24.03.2025

21

हितेश कुमार
शोधार्थी (चित्रकला विभाग)
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय
अल्मोड़ा, (उत्तराखण्ड)
ईमेलः hiteshchanyal@gmail.com

सारांश

आधुनिकीकरण शब्द वास्तविक रूप में एक सतत प्रक्रिया का बोध कराता है। आधुनिकीकरण से सौंदर्य व आध्यात्मिक के नवीन दृष्टिकोण मानव के समक्ष परिलक्षित होते हैं। आधुनिकीकरण समाज में हो रहे परिवर्तन को दर्शाता है। कलात्मक में आधुनिकीकरण का समावेश वर्तमान में विभिन्न कला शैलियों के अनुरूप होता है। कला जगत में कलात्मक परिवर्तन होते रहते हैं। जिसमें कलाकार शिल्पी के कला संबंधित गतिविधियों में निश्चित रूप से विकास होता है। वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी के नवीन अनुप्रयोगों से कलाकार विभिन्न तरीके के प्रयोग को कर रहे हैं। जिससे कलाकृति के सृजन का स्तर एक नई दिशा में अग्रेषित हो रहा है।

वर्तमान में कला जगत में आधुनिक व अनेक नवीन माध्यमों का प्रयोग होने लगा है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा कला का प्रचार व प्रसार वर्तमान में अत्यधिक देखने को मिल रहा है। कलाकार परंपरागत तौर–तरीकों को त्याग कर नए माध्यमों की ओर अग्रेषित हो रहे हैं। यदि हम परंपरागत रूप से कार्य करने वाले हस्तशिल्पियों को देखें तो उन्होंने भी अपने परंपरागत उपकरणों को त्याग कर इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों को अपना लिया है। यह सिर्फ हस्तशिल्प में ही नहीं वरन पेंटिंग, स्कल्पचर, संगीत आदि में भी देखने को मिलता है। परंतु एक बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है कि परंपरागत तौर तरीके से बनाई गई कला मशीनों की सहायता से बनाई गई कला के तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ है। आधुनिक और नवीनीकरण से कलाकारों को अपने कृतियों के निर्माण में सहायता तो अवश्य मिली है परंतु मशीनों की सहायता से निर्मित की गई कृतियों में और परंपरागत रूप से बनाई गई कृतियों में अत्यधिक अंतर देखने को मिलता है। आधुनिकता समय के साथ बदलती सोच और नवीन विचारों को प्रदर्शित करती है। कला में आधुनिकता के समावेश से कलाकार वर्तमान में अनेक नए दृष्टिकोण से सामाजिक संदेशों को लोगों के समक्ष रख रहे हैं

मुख्य बिंदु

आधुनिकता, परंपरागत, आवासीय भवन, नक्काशी।

कला के संदर्भ में आधुनिकीकरण का अर्थ है कि पारंपरिक कलाकृतियों को आधुनिक विचारध ाारा, तकनीकों व सामग्री के साथ मिलाकर एक नवीन स्वरूप को तैयार करना। इस प्रक्रिया में पारंपरिक वास्तुकला व निर्माण शैलियों को आधुनिक तकनीक व सामग्री के साथ समाहित किया जाता है। कुछ समय के सौंदर्य के अनुरूप। व कुछ परंपरा को जीवंत रखने हेतु। वर्तमान समय में नवीन शिल्पियों में नये दृष्टिकोण और निमार्ण सामग्री की प्रकृति पर नए विचारों के साथ प्रयोग किये। नए शिल्पियों ने व्यक्तिपरक्ता व व्यक्तिवाद का स्वागत किया। शिल्प व कला के विकास में गतिशीलता सर्वाधिक महत्वपूर्ण आयाम में से एक है। वैदिक काल में शिल्प आधारित समाज में हर प्रकार के शिल्पी को अत्यधि ाक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।[1] समय परिवर्तन के साथ कला में भी परिवर्तन आये और यही परिवर्तन कुमाऊँ के आवासीय भवनों में प्रदर्शित होती है। कुमाऊँ के प्राचीन आवासीय भवनों में की गई नक्काशी समय बीतने के फलस्वरूप परिवर्तित होती गई। पारंपरिक भवन अपने परंपरागत तरीकों प्रथाओं और संरचनाओं में समय के अनुरुप परिवर्तन होते चले गये।

प्राचीन व नवीन भवन निर्माण सामग्री

कुमाऊँ क्षेत्र में अधिकांश भवन प्रस्थर के हैं। अतीत में लकड़ी व पत्थर से निर्मित आवासीय भवन बनते थे। इसका मुख्य कारण मध्य हिमालय क्षेत्र में लकड़ी की बहुल्यता है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि उत्तरांचल के स्थानीय आवास गृहों के निर्माण में स्वतंत्रता से पूर्व लकड़ी का व्यापक प्रयोग किया जाता था।[2] प्राचीन निर्माण सामग्री में पत्थर, लकड़ी ,गारा (मिट्टी का लेप) आदि सामग्री का प्रयोग होता था। काष्ठ चयन से लेकर उपकरण के निर्माण तथा र्निदोषता और शुभ–अशुभ का विशेष ध्यान जाता था।[3] सौ फीसदी प्रकृति से प्राप्त चीजों का उपयोग आवासों के निर्माण हेतु किया जाता था। इन चीजों के प्रयोग से पारंपरिक भवनों की मजबूती व स्थायित्व बढ़ता था।

वर्तमान समय में तकनीक के आने से व भवन निर्माण हेतु सुलभ सामग्री की उपलब्धता के कारण अनेक प्रकार की सामग्री जैसे स्टील, लौह, कंक्रीट व आधुनिक इंसुलेशन सामग्रियों का उपयोग पारंपरिक लकड़ी व पत्थर के साथ किया जा रहा है। पुरातात्विक साहित्य एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि काष्ठ का प्रयोग मानव अति प्राचीन समय से करता आया है।[4] जो कि आसानी से उपलब्ध है। आधुनिक भवनों को भूकंप रोधी डिजाइन में को तैयार किया जा रहा है। कुमाऊँ क्षेत्र भूकंप संभावित क्षेत्र होने के कारण खतरा अपेक्षाकृत अधिक रहता है। इसलिए भवनों का डिजाइन भूकंप रोधी बनाया जाता है। यदि सुंदरता के पक्ष को देखें तो आधुनिक भवन सुंदर व सुविधाजनक तो हैं ही साथ ही साथ कई भवनों में पारंपरिक सौंदर्य का भी ध्यान रखा जाता है। भवन की बाह्य संरचना में पारंपरिक कला का समावेष करते हुए आंतरिक डिजाइन को आधुनिक सुविधा युक्त बनाया जाता है। वर्तमान में पारंपरिक शिल्पियों का मिलना संभव नहीं है हालांकि ग्रामीण क्षेत्र में कुछ शिल्पकार अभी इस परंपरागत कला के कार्य को करते हुए मिल जाते हैं। जो न केवल अपनी आजीविका चला रहे हैं बल्कि पारंपरिक शैलियों का संरक्षण भी कर रहे हैं ।

आधुनिकीकरण व शहरीकरण का भवनों पर प्रभाव

आधुनिकीकरण ने सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलुओं द्वारा कुमाऊँ के आवासीय भवनों को प्रभावित किया। सकारात्मक परिवर्तनों में आधुनिक भवन भूकंप रोधी व तकनीकी के

उपयोग से बनते हैं। जो सुरक्षा के दृष्टिकोण से अति आवश्यक हैं। तकनीकी में सोलर लाइट आदि का उपयोग होता है जो की ऊर्जा की खपत को कम करते हैं व अनेक सुविधाओं युक्त आधुनिक भवन होते हैं। जिनमें बेहतर जलापूर्ति वह अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली को अत्यधिक ध्यान में रखा जाता है।

नकारात्मक प्रभाव में सर्वप्रथम नुकसान हमारी प्राचीन परंपरा को है। हमारी वास्तु शैली व प्राचीन संस्कृति धरोहर नष्ट हो रहे हैं। जिसे आने वाली पीढ़ी अपने संस्कृति के बारे में जानने से अनभिज्ञ रह जायेगी। आधुनिकीकरण के फलस्वरुप ही आधुनिक सामग्रियों का अत्यधिक प्रयोग पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है। जिसमें प्लास्टिक व अन्य नॉन–बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों का उपयोग किया जाता है। एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव जो कि स्थानीय शिल्पकारों पर पड़ता है तकनीकी के आने से पारंपरिक शिल्प व कलाकारें का ह्रास हो रहा है। जिससे की शिल्पकारों की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव पढ़ रहा है।

कुमाऊँ का प्राचीन समाज धर्म, आस्था व विश्वास का रहा है। देवी देवताओं के प्रति आस्था व विश्वास यहां के लोगों में अत्यधिक होती है। प्राचीन परंपरागत भवनों के अग्रभाग में भी देवी या देवता की आकृति उत्कीर्ण होती थी। शिल्पकार द्वारा बड़े कुशलता पूर्वक इन आकृतियों को कास्ठ में उत्कीर्ण किया जाता था। यशोधर मठपाल जी के अनुसार जनपद अल्मोड़ा कास्ठ कला में कुमाऊँ में सबसे धनी है।[5] इन प्रतिमाओं में प्रमुख रूप से शिव, गणेश, सूर्य, भैरव आदि की आकृतियाँ उत्कीर्ण होती थी। आधुनिकीकरण के प्रभाव से यह आकृतियाँ प्राय आवासीय भवनों से गायब सी हो गयी। वर्तमान में भवनों के अग्रभाग में रेडीमेड पत्थर में प्रिंट किया हुआ देवी देवता का चित्र लगाना अधिक आकर्षक माना जा रहा है। इन प्रिंटेड चित्रों ने कास्ठ में उत्कीर्ण देवी–देवता की आकृतियों की जगह ले ली है। कास्ठ में उत्कीर्ण आकृतियों में सूर्य की आकृति प्रमुख थी। सूर्य भगवान की पूजा प्रतीक के रूप में भी की जाती है। कुमाऊँ के अल्मोड़ा के कटारल में भी सूर्य का मंदिर स्थित है। उल्लेखनीय है सूर्य पूजा इस क्षेत्र में छठी–सातवीं ई0 से प्रचलित हो गई प्रतीत होती है।[6] इस प्रकार कुमाऊँ क्षेत्र धार्मिक रहा है व धर्म के प्रति आस्था इनके भावनाओं से प्रदर्शित होती है।

वर्तमान समय में बदलती जीवन शैली के उपरांत टेक्नोलॉजी तथा मशीन निर्मित प्रिंटेड कलातियों का प्रचलन बढ़ा है। अधिकांश पारंपरिक रूप से कार्य न होकर मशीनों से कार्य किया जा रहा है। जो हस्त निर्मित कलाकृतियाँ हैं उन्हें मशीनों द्वारा निर्मित नहीं किया जा सकता। यानी मूल स्वरूप की अनुकृति मशीनों द्वारा नहीं की जा सकती है। उत्तराखंड सरकार द्वारा होमस्टे जैसी योजनाओं को चलाया जा रहा है। जिससे बाह्य लोग भी आकर यहां की संस्कृति से रूबरू हो सके। जो की संस्कृति को बचाने हेतु एक सार्थक पहल है।

कुमाऊँ क्षेत्र के अधिकांश आवासीय भवनों का डिजाइन एक समान ही दिखाई देता है। जिसमें पशुओं के रहने हेतु व किचन, बैडरूम आदि की व्यवस्था होती थी। यह प्राचीन आवासीय भवन गर्मियों में ठंडे रहते हैं तथा जाडों गर्म। अब इस प्रकार के भवनों के निर्माण हेतु सामग्री का मिल पाना आसान नहीं है या सामग्री उपलब्ध नहीं होती है। इसलिए पारंपरिक भवन वर्तमान आधुनिक भवनों में तब्दील हो गए हैं। आधुनिक समय के भवनों के निर्माण में कंक्रीट, सीमेंट, रेत आदि का प्रयोग होता है जो कि आसानी से उपलब्ध हो जाता है। आज प्राचीन समय की भवनों को

बनाने हेतु कुशल शिल्पियों का मिलना भी एक चुनौती पूर्ण कार्य है। मशीनों द्वारा तैयार डिजाइनों को आधुनिक भवनों में प्रयोग किया जा रहा है। क्योंकि हस्त निर्मित शिल्पियों द्वारा तैयार कास्ठ कृतियाँ अत्यधिक महंगी हैं। व उनकी उपलब्धता कम है। इस प्रकार से प्राचीन पारंपरिक रूप से बने डिजाइन व नक्काशी पूर्ण कास्ठ कृतियों का स्थान मशीनों द्वारा निर्मित रेडीमेड डिजाइनों ने ले लिया है। जो कि वर्तमान समय में अत्यधिक माँग पर भी बनी हुई है।

डिजाइन कार्य आर्किटेक्चर

वर्तमान समय में आभासी भवनों को अत्यधिक डिजाइन युक्त व आकर्षण बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस डिजाइन में बड़ी–बड़ी खिड़कियों को शामिल किया जा रहा है जो की प्रकाश और हवा 'वेंटिलेशन' के लिए उपयुक्त होते हैं। आधुनिक समय के भवनों में छोटी से छोटी चीजों काभी ध्यान रखा जाता है। किचन को मॉड्यूलर बनाने का प्रयास किया जाता है। जो कि वर्तमान समय में अत्यधिक प्रचलन में है। ऐसी भवनों को स्मार्ट होम तकनीकी से परिपूर्ण बनाया जा रहा है। जिसमें इंटरनेट ऑफ थिंग्स आधारित स्मार्ट होम उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है। जिससे कि तकनीकी व इंटरनेट को आसानी से उपयोग किया जा सके। साथ ही साथ इन भवनों में स्मार्ट लाइटिंग और और थर्मोस्टेट सिक्योरिटी सिस्टम को भी स्थापित किया जा रहा है। जो की सुरक्षा की दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण व कारगर साबित हुए हैं। घरों के निर्माण की समय टिकाऊ सामग्री का उपयोग किया जा रहा है। जो कि पर्यावरण के अनुकूल भी है और एक कुशल निर्माण तकनीकी शैली में बने घर सुविधा व सुरक्षा की दृष्टिकोण से लाभदायक भी है ।

अतिथि उत्तराखण्ड गृह आवास (होम स्टे) नियमावली के माध्यम से राज्य के शहरी क्षेत्रों के साथ–साथ दूरस्थ पर्यटक क्षेत्रों में पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु, स्तरीय आवासीय सुविधा बढ़ाने, स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने तथा भवन स्वामियों को अतिरिक्त आय का स्त्रोत उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से अतिथि उत्तराखण्ड गृह आवास (होम स्टे) नियमावली तैयार की जा रही है।[7] कुमाऊँ क्षेत्र के लिए पारंपरिक भवन सिर्फ लोगों के रहने के लिए पत्थर और लकड़ी से तैयार मकान नहीं है बल्कि संस्कृति को सजोंये रखने हेतु संस्कृति के भंडार भी हैं। कुमाऊँ मंडल में अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ जनपद कास्ठ नक्काशी की दृष्टि से समृद्ध हैं।[8] यहाँ के आवासीय भवन संपूर्ण पहाड़ी समुदाय व उनकी कलाकारी व कास्ठ में उकेरी गई विशिष्ट नक्काशी के प्रति उनकी रुचि व बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करती है। इतने कम संसाधनों की बावजूद व चुनौती पूर्ण कुमाऊँ के पहाड़ी इलाकों के साथ इन्होंने सामंजस्य बिठाकर अपने आप को मजबूत किया व कास्ठ में उकेरी गई इन विशिष्ट आकृतियों को यहां की सांस्कृतिक पहचान बना दिया। इन आवासीय भवनों में स्थानीय लोक कथाओं और अनेक धार्मिक प्रतीकों को अत्यधिक कुशलता पूर्वक दर्शाया गया है। जो इनके आवासीय भवनों को आध्यात्मिकता से जोड़े रखती है। यह आवासीय भवनों के वास्तुकला में पर्वतीय समुदाय के लोगों की सदियों पुरानी कुशलता व कलाकारी का बेजोड नमूना है व कुमाऊँ के सामुदायिक जीवन शैली में गहराई से समाहित हैं। इन प्राचीन भवनों की लेआउट में आमतौर पर आंगन शामिल होते हैं। जहां लोग त्योहार, समारोह, शादी ब्याह व सामाजिक मिलजोल के लिए इकट्ठा होते हैं। जो एक घनिष्ठता और आस पड़ोस के संबंधों की गहराई का परिचायक होता है।

कुमाऊँ के पहाड़ी वह प्राचीन घर यहां का गौरव बने हुए हैं। वर्तमान में आधुनिक तकनीकी व निर्माण शैली का प्रचलन बड़ा हुआ है। कई जगह आर्किटेक्चर और भवन स्वामी पारंपरिक सौंदर्य से समझौता किए बिना आधुनिक तत्वों का समावेश भी अपने भवनों के निर्माण में कर रहे हैं। प्राचीन और नवीन का यह मिश्रण प्रदर्शित करता है कि यह आवासीय भवन बदलती दुनिया में प्रासंगिक बने हैं और अपने मूल जड़ों को सुरक्षित रखें हुए हैं। कुमाऊँ के प्राचीन आवास इस समुदाय के लचीलेपन और सरलता का परिणाम है। इन घरों की वास्तुकला एक ऐसे तरीके को प्रदर्शित करती है जो की प्रकृति और समुदाय से गहराई से जुड़ी हुई है। आज आवश्यकता है तो प्राचीन व परंपरागत इन घरों के संरक्षण की जो की आने वाले समय में यहां की संस्कृति, कला व हमारे प्राचीन बुजुर्गों द्वारा निर्मित इन कास्ठ कलाकृतियों को सुरक्षित व संजाये रखें। जो की नई पीढ़ी के लिएय हां की संस्कृति को जानने का एक मुख्य साधन बन सके।

संदर्भ

1. मठपाल, यशोधर, (1997) उत्तराखण्ड का काश्ठ शिल्प; बिशन सिंह महेंद्र पाल सिंह पृ० सं०–28–29
2. जोशी, प्रसाद महेश्वर डॉ0; (1 जनवरी 1994) उत्तरांचल हिमालय समाज संस्कृति इतिहास एवं पुरातत्व; अल्मोड़ा बुक डिपो पृ० सं०–33
3. घोष, इला (2004) संस्कृत वाडमय में शिल्पकलाऐं; इर्स्टन बुक लिकर्स दिल्ली पृ० सं०–238
4. टम्टा, सुरेश, (1 जनवरी 2007) वर्तमान अतीत मध्यहिमालय का शिल्प शिल्पकार एवं नृ–पुरातत्व; अल्मोड़ा बुक डिपो पृ० सं०–46
5. मठपाल, यशोधर; (1997) उत्तराखंड का कास्ठ शिल्प; बिशन सिंह महेंद्र पाल सिंह पृ० सं०–39
6. नेगी, सिंह विद्याधर डॉक्टर; (2012) कुमाऊँ का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास; मल्लिका बुक्स दिल्ली पृ० सं०–122
7. https://uttarakhandtourism.gov.in/homestay/details.php?pgID=home-stay-policy
8. सक्सेना, किशोर कौशल; (1994) कुमाऊँ कला शिल्प एवं संस्कृति; अल्मोड़ा बुक डिपो पृ० सं०–137।